उपसंहार

नाटक कला का संवृद्ध रूप है जिसमें मानव की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति मूर्त्त रूप ले पाती है। इसका कार्य जीवन के संगत-असंगत तथ्यों को रंगमंच पर प्रस्तुत कर समाज को रू-ब-रू कराना है। नाटककार समयानुरूप विषय का चयन कर रंगमंच के लिए एक आलेख तैयार करता है। वह उन सारे मानदंडों को अपने अनुरूप संयोजित कर लेखन कार्य को अंजाम देता है जिससे सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक जीवन का विस्तृत परिदृश्य हमारे सामने खड़ा हो।

भारत सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक रूप से एक सम्पन्न राष्ट्र रहा है। देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों और महापुरुषों के जीवन प्राचीन काल से ही नैतिक शिक्षा के माध्यम रहे हैं। आख्यानपरक रीति के द्वारा घरों में कहानियों के जरिए महापुरुषों के जीवन की चर्चा की जाती रही है। अपने शुरुआती दौर से ही भारतीय कलारूप लौकिक और धार्मिक प्रश्नों को उठाते रहे हैं। जीवन के विविध पक्षों की तलाश इससे की जाती रही है। जीवन वृत्त और सिद्धांतों को इसमें अपने सामयिक स्थितियों के द्वारा प्रदर्शित किया जाता रहा है।

आज का मनुष्य पूर्णतया पाश्चात्य जीवन-शैली में ढल चुका है। चारों तरफ मशीनों का बोल बाला है। मनुष्य का जीवन हर तरह से एक मशीन का रूप ले लिया है। इस पूंजीवादी दौर का एक ही सर्वमान्य मूल मंत्र है सुविधापरस्ती जिससे नकारा नहीं जा सकता है। प्राचीन मूल्यों को कोई नहीं पूछता लेकिन फिर भी जो परंपरागत धारणाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे अंदर बसे हैं, उन्हीं विचारों के कारण कभी हम अतीत की ओर लौटना चाहते हैं तो कभी अध्यात्म में अपना आश्रय ढूंढते हैं। कोई भी दर्शन या

सिद्धान्त पूर्ण नहीं होता, कुछ न कुछ कमियाँ जरूर होती है। कुछ कमियों के बावजूद गांधी के विचार मनुष्य के तमाम उलझे सवालों का जवाब देते हैं। मानव जीवन की विस्तृत सकारात्मक रूप रेखा इसमें दिखाई देता है।

गांधीवादी दर्शन हमें एक सामाजिक प्राणी के रूप में सोचने को मजबूर करता है। जहां मनुष्य अपने आवश्यकता के अनुरूप ही भौतिक वस्तुओं का उपयोग करता है। वह व्यक्ति से बढ़कर समाज को मानता है। कोई भी छल दूसरे मनुष्य को आहत पहुंचा सकता है, गांधीवादी मानसिकता हमें इससे बचने की हमें प्रेरणा देता है।

भारतीय कला तथा साहित्य के समस्त क्षेत्र में गांधीवादी दर्शन का प्रयोग किया गया है। नाट्य साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। अनेक भारतीय नाटककारों ने गांधी जीवन तथा दर्शन को अपने नाटक का आधार बनाया है। हिंदी के नाटककारों ने भिन्न-भिन्न परिस्थितियों को उठा गांधीवादी दर्शन की आज के समय में प्रासंगिकता की तलाश की है।

आज के समय में गांधीवादी मूल्यों की क्षति को हिंदी नाटकों में बखूबी दिखाया जा रहा है। सर्वेश्वर जैसे नाटककार ने राजनीति के क्षेत्र में हो रहे गांधी के नाम से लूट को अपने 'बकरी' नाटक में रखा है तो असगर वजाहत ने फैंटेसी के माध्यम से एक अद्भुत संवाद का क्षेत्र खोला है जहां अपने हत्यारे को क्षमा कर उन कारणों को तलाश करने की बात हुई है जिससे लोग हत्या जैसे कुकर्म पर उतारू हो जाते है। यह नाटक गांधी के विचारों में युगानुरूप परिवर्तन की भी मांग करता है। गिरिराज किशोर अपने नाटक में उन प्रश्नों के जवाब तलाशते हैं जिनसे कोई व्यक्ति कर्मों, सोच और उद्देश्य में महात्मा बनता है। यह एक व्यक्ति की रचना-प्रक्रिया और संघर्ष के क्षणों में आस्थावादी बन

लगे रहने का भी मार्ग दिखाता है। इनमें गांधी की दुर्बलताओं को भी दिखाया गया है लेकिन उसे पहचान जल्दी बदलने की शक्ति ने ही उन्हें महात्मा बना दिया। लोगों के दिलों में वे बस गए। पहली बार भारत की राजनीति में कोई ऐसा व्यक्ति हुआ जो अपने बल पर जनबल को एक कर सका। इन कारणों से ही नाटककारों ने गांधीवादी दर्शन और गांधी चरित्र को अपने नाटकों का नायक बनाया।

इन नाटकों में केवल आस्था भाव से गांधी की वंदना नहीं की गई है। उनके समय में झांक कर उन परिस्थितियों को तलाशा गया है जिसमें कोई व्यक्ति देशहित में कार्य करने की प्रेरणा ले सकता है।

आज जब मानव मूल्य के सारे आदर्श अपने नैतिक पतन की ओर जा रहे है तो गांधीवाद ही वह माध्यम है जिससे मनुष्य अपने मनुष्यता की कसौटी सीख सकता है। फर्क केवल इतना है कि हम हु-ब-हु किसी आदर्श व दर्शन को अपने जीवन का माध्यम न बना उसे जांच परख कर अपनाने की कोशिश करें।

अतः कहा जा सकता है कि गांधीवादी दर्शन समसामयिक सामाजिक जीवन के लिए बेहद आवश्यक है और इन्हीं आवश्यकताओं के कारण नाटककारों ने अपने नाटक का विषय गांधी जीवन और उनके दर्शन को आधार बनाकर रखा है।